Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-III February 2015

मुन्शी प्रेमचन्द के साहित्य की सामाजिक प्रतिबध्दता

डॉ. रमेश शिंदे: अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, यशवंतरा चव्हाण महाविद्यालय, अंबाजोगाई जि. बीड

हिन्दी कथा साहित्य को नया आयाम देनेवाले तथा सम्पूर्ण साहित्य संसार पर अपनी प्रतिभा से अमीर प्रभाव निर्माण करनेवाले प्रेमचन्द सर्व परिचित है, फिर भी उनके द्वारा रचित साहित्य की, मूल संवेदना या आत्मा को समझने के लिए उनके व्यक्तिगत जीवन का अध्ययन अपेक्षित है-चाहे वह संक्षेप में क्यों न हो।

प्रेमचन्द का जन्म काशी के नजदीक लमही नामक ग्राम में सन १८८० में एक कायस्थ परिवार में हुआ। प्रेमचन्द के पिता अजायबराय मध्यवर्ग के व्यक्ति थे - वे जो वीस रुपये मासिक वेतन पर डाक विभाग की नौकरी किया करते थे, माता आनंदीदेवी बिदुषी महिला थी -जिनका स्वर्गवास प्रेमचन्द की उम्र की नौ वर्ष की अवस्था में हुआ. बाद में उनके पिताजी ने दूसरा विवाह किया। परिणाम स्वरुप उन्हे सौतेली माँ के व्यवहार की कटुता का अनुभव मिला। प्रेमचन्द की उम्र के सतहवे साल ही पिता का देहांत हुआ। फलत: परिवार चलाने का दायित्व उन्हींपर आया. अर्थात खेलने - कुदने की उम्र में जीवन के विविध क्षेत्र की जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ा।

प्रेमचन्द का वास्तविक नाम धनपतराय था। चाचा उन्हे नवाबराय कहा करते थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर में ही उर्दू-फारसी की रही। तदुपरान्त विद्यालयीन शिक्षा के लिए आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ा किंतु वे मेधावी छात्र होने से उन्हे नि:शुल्क शिक्षा मिल सकी। ट्युशन चलाकर गुजारा करते हुए श्रमसाध्य जीवन यापन किया. इंटर कक्षा में गणित में कमजोर होने के कारण अनुत्तीर्ण हुए। आगे उन्होंने स्वाध्याय के माध्यम से कला स्नानक की उपाधी हासिल की और सब डिप्टी इन्सपैक्टर पद पर पहुँचे। १९२० के भारतीय आजादी आंदोलन से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दिया और साहित्य सृजन करते लगे। समांतर रुप में असहयोग आंदोलन में भी सक्रिय रहे। इस कार्य के लिए उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने सहयोग दिया तथा उन्हे जेल की यात्रा भी करनी पड़ी।

प्रेमचन्द जी ने जीवन के अनेक क्षेत्रों में अपना योगदान दिया है। चुनार के मिशन स्कूल के अध्यापक से सरकारी सब डिप्टी इन्सपैक्टर बने, किंतु वे हमेशा आर्थिक विपन्नता और अपनी वैचारिकता के कारण सेवा क्षेत्र बदलते रहे. विविध पत्र-पत्रिकाओं को चलाते हुए साहित्यिक पत्रकारिता में योगदान दिया। जीवन के अंतिम दिनों में फिल्मी पटकथा लेखन कार्य हेतु महाराष्ट्र के मुंबई पहुँचे. किंन्तु इस क्षेत्र की वास्तविकता से रुबरु होते हुए वहाँ ठहर नही सके।

स्पष्ट है कि प्रेमचन्द जी का जीवन यातना, संघर्ष और त्याग का रहा है। शायद इन्ही परिस्थितियों से प्राप्त अनुभव के कारण ही उन्होंने स्वयं को हमेशा मजदूर माना है और जीवनभर सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व किया है, इस कारण ही उन्हें जनवादी लेखक माना जाता है।

प्रेमचन्द की साहित्य साधना उर्दू में नवाबराय नाम से शुरु हुई. '**हम खुर्मा व हम सबाब**' और बाद में **जलवए ईसार**' उपन्यास लिखे, तो 'संसार संकलन उर्दू भाषा में लिखे' जिसमें अँग्रेज सरकार द्वारा जब्त '**सोजे**

ISSN 976-9714

www.gnrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-III February 2015

वतन' भी है। इस संकलन में मात्र पाँच कहानियाँ थी। जो भारतीय स्वराज्य की प्रेरक थी। बाद में उन्होंने हिन्दी भाषा में साहित्य - सृजन किया।

प्रेमचन्द का रचना संसार व्यापक होते हुए भी गुण और प्रभाव परिणाम की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं, उन्होंने कथा साहित्य सृजन को नयी दिशा प्रदान की है। प्रेमचन्द पूर्व कथा साहित्य में मात्र कल्पनात्मक उडान दिखायी देती है. तिलस्मी औ ऐय्यारी कथा साहित्य, जासूसी और साहस का कथा साहित्य और सामाजिक - ऐतिहासिक कथा साहित्य में कामुकता की प्रधानता - साहित्य का मूल स्वर था। जाहिर है की पाठकों का मनोरंजन ही रचना का उद्देश्य रहा है। 'चंन्द्रकांता' जैसे लोकप्रिय उपन्यास से पाठकों की अभिरुची को परिवर्तित करना इतना आसान नहीं है, किंतु उन्होंने पाठकों को साहित्य को तिलस्म और ऐय्यारी के कटघरे से मुक्त किया. इसके अलावा प्रेमचन्दजीने समाज के असाधारण, अभिजात, धनिक वर्ग से निगाह हटाकर मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग की पीडित शोषित जनता को केन्द्र में रखा और इस कारण ही उनके कथा साहित्य में किसान, मजदूर, दलित शोषित आदि सर्वहारा वर्ग के पात्र पूँजिपतियों से संघर्ष करते हुए पाये जाते है - वर्गगत चरित्र और व्यक्तिगत चरित्र -चित्रण प्रेमचन्द के कथा लेखन की विशेषता है। प्रेमचन्द से पूर्व कभी भी और किसी भी साहित्य में सामान्य जनता की आवाज को उनकी समस्याओं को केन्द्रीय नही माना गया। प्रेमचन्द ही पहले साहित्य शिल्पी है। उन्होंने सामान्य जनता के जीवन को साहित्य सृजन का मुख्याधार स्वयंमेव उजागर होती है। उन्होंने कहा भी है कि साहित्य जीवन की आलोचना है - इसकारण की उनके साहित्य में सम-सामायिक जीवन के सभी आयाम प्राप्त होते है।

प्रेमचन्द बीसवीं शती के महान-युगान्ताकारी रचनाकार है। इस गुण के अन्य प्रमुख कहानीकार जयशंकर प्रसाद ही रहे है। अस्तु, उनकी संवेदना ने समाज के हर वर्ग, वर्ण, धर्म एवं हर तबके मनुष्य को समाविष्ट किया है और उनके दु:ख दर्द को ही साहित्य-सृजन का प्राण तत्व माना है।

प्रेमचन्दजी ने तीन सौ से भी ज्यादा कहानियाँ लिखी है। सन १९१५ से हिन्दी कहानी सृजन का आरंभ किया और लेखन कार्य का सिलसिला १९३६ तक जीवनपर्यंत चलता रहा।

प्रेमचन्द के कहानी लेखन का समय भारतीय आजादी आंदोलन के उथल पुथल का रह है। अपने युगीन राजनीतिक सच्चाइयों को आपने आहुती, समर-यात्रा, जुलूस, सत्याग्रह, शतरंत के खिलाड़ी आदि कहानियों से उजागर करते हुए भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक प्रकार से जनमानस का निर्माण किया है।

भारतीय ग्रामीण जीवन में किसानों, मजदूरों और दलितों की यथाास्थिति का अंकन करने वाली प्रेमचन्द की अनेक कहानियाँ है। जमीदारों और महाजनों द्वारा किया जानेवाला शोषण-अत्याचार पर दृष्टिपात किया है।

'पूस की रात' कहानी में साहूकार सहना की शोषणवृत्ति और ऋस्वु-मुनि का किसानी परिवार की विसंगती चित्रित है। जाड़े के मौसम में किसानों को कम्बल की आवश्यकता होती है। 'कफन' कहानी भी समाज जीवन के दो वर्ग शोषक और शोषित को उजागर करती है -घीसू और माधव जमींदार से कफन के लिए रुपये माँगकर शराब पीत हैं - वह इस स्थिती में क्यों पहुँचे? प्रश्न का उत्तर कफन कहानी की कथा है।

'ठाकुर का कुआँ' कहानी की गंगी-व्यवस्था को चुनौती देती है - मजदूर होते हुए भी एक नारी अभिजात वर्ग की सच्चाई को बयान करती है - स्पष्ट है कि शोषक उँचे वर्ग के कैसे हो सकते है और हम काम करनेवाले

www.gnrws.in

ईमानदार और प्रामाणिक होते हुए भी नीच कैसे? सवाल उठाकर प्रेमचन्द पाठकों को सोचने - समझने के लिए मजबूर करते है।

'सद्गति' में वर्ग संघर्ष की भावना-अमीर गरीब की खाई को उजागर करती है. दुखी चमार जीवनभर भक्ति, सेवा और निष्ठा करता हुआ पंडित घासीराम के शोषण से लकड़ी चिरता हुआ कुत्ते की मौत मरता है।

प्रेमचन्दजी ने नारी जीवन के सभी प्रश्नों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है. नारी की अव्यक्त भावना को अभिव्यक्ति दी है - कायर,शांति, आहुति, निस्कासन, सुभागी, शिकार, विमाता, ज्योति, बूढी-काकी, अभागन,घासवाली आदि कहानियों में अछूत-उध्दार, बालविवाह, वृध्दविवाह, बहुविवाह, विधवा विवाह,सास-बहू संबंध नारी की सोज समस्या, अंतरजातीय विवाह, पारिवारिक समस्याओं को विषयवस्तु बनाया है. समाज के नारी विषयक दृष्टिकोन को उजागर करते हुए बडे घर की बेटी' में आनंदी का चरित्र भारतीय नारी की अस्मिता का प्रतिनिधित्व करता है।

पाठकगण अब प्रेमचन्दजी द्वारा लिखित उपन्यासों पर बात करते हैं।

- **वरदान :**

प्रेमचन्द लिखित वरदान उपन्यास भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है. इस रचना का उद्देश्य भी देशभक्ति ही है। इसमें बृजरानी और प्रताप बचपन के साथी है और दोनों का विवाह भी होना तय था, किन्तु बृजरानी का विवाह कमालाचरण से होता है - अंतत: प्रेम और विवाह की समस्या दर्शाते हुए प्रेमचन्द इन तीन पात्रों के कार्यकलाप द्वारा वैयक्तिक प्रेम त्यागकर देशप्रेम के बनते माहौल में सेवारत दिखाया है।

- **प्रतिज्ञा :**

प्रेमचन्द रचित यह प्रथम सामाजिक उपन्यास है। इसकी कथावस्तु में पीडित बिधवा नारी की समस्या को रखा है। इसमें दीनानाथ और अमृतराय दो मित्र प्रमुख पात्र है। एक विवाहित है, तो दुसरा विधुर है। विधुर अमृतराय -समाजसुधार की विचारधारा रखतें है - उनका पुनर्विवाह अपनी कुआँरी साली प्रेमा से होना तय था, किन्तु वे किसी विधवा से विवाह करना चाहते है। इधर दीनानाथ से प्रेमा का विवाह होतो है. प्रेमा अमृतराय के समाजसुधारक के कार्य की पति के सामने निरंतर प्रशंसा करती है। परिणाम स्वरुप वह भी अमृतराय के समाज-सुधारक अभियान में सहयोग देता है। मुख्य कथा के समांतर पूर्णा नाम की विधवा की निजी जीवन समस्याएँ उजागर होती है. जिससे पाठक सोचने समझने के लिए मजबूर बनता है. स्पष्ट है विधवा समस्या और पुनर्विवाह की सामाजिक समस्याओं को प्रेमचन्द उजागर करते है। अंत में - वनिताश्रम की निर्मिती से इस समस्या का समाधान भी प्रस्तुत करते है।

- **सेवासदन :**

प्रेमचन्द का यह उल्लेखनीय सामाजिक उपन्यास है। इसमें वेश्या समस्या को स्पष्ट किया है। कोई नारी वेश्या क्यों बनती है? इस प्रश्न का उत्तर सेवासदन उपन्यास है। दरोगा कृष्णचंद्र की लड़की सुमन इसकी नायिका है। पिता-पुत्री के विवाह हेतु रिश्वत लेता है और पकडा जाता है। अत: पुत्री सुमन का विवाह अधेड़ व्यक्ति गजाधर से होता है। अत: अनमेल विवाह की परिणिती वैवाहिक जीवन को कटु बनाती है. पग-पग पर अपमानित

www.gnrws.in

सुमन सोचती है कि समाज में पत्नी का महत्व है या वेश्या का? एक दिन वह भी वेश्या बनती है और अपने किये पर पछतांती भी है।

किन्तु उसे तदुरपरान्त सामान्य जीवन जीना आसान नही होता. वह विधवाश्रम - बहन शांता और बाद में गजानन्द स्वामी की कुटिया में दर-दर भटकती हुई पहुँचती है - जहाँ आश्रय मिलता है. यहाँ गजानन्द स्वामी दूसरा-तिसरा कोई नही स्वयं उसका पति गजाधर है, अत: दोनों मिलकर विधवा नारी शोषित नारी के लिए 'सेवासदन' की स्थापना करते है।

• प्रेमाश्रम :

प्रेमाश्रमा ग्रामीण किसान और जमीनदार के जीवन पर आधारित उपन्यास है. इसमें तीन प्रकार के जमींदार दर्शाये है - जो की एक परिवार के सदस्य है।

१. ज्ञानशंकर -नयी पिढी के अत्याचारी जमीदार है - जो स्वार्थी,चतुर, क्रुर और कुटनीतिज्ञ शोषक है।

२. प्रभाशंकर - पुरानी पिढी के जमीदार है - जो महानुभूति और भाईचारे के स्वभाव के है।

३. प्रेमशंकर - प्रेमशंकर, प्रभाशंकर के पुत्र है. ये प्रेमचन्द के विचारों से प्रभावित आदर्श जमींदार है - किसानों तथा अनाथों की सेवा में सर्वस्य त्यागकर 'प्रेमाश्रम' की स्थापना करता है।

• रंगभूमी :

सन १९२७-२८ में लिखा गया यह उपन्यास युगीन समाज के सभी स्तरों को उजागर करता है। इसाई परिवार के मिस्टर ज्ञान सेवक, पाण्डेंपुर गाँव में सिगारेट का कारखाना निर्माण करना चाहते है और इसके लिए अंधे सूरदास की जमीन प्राप्त करना चाहते है। जिसके लिए सूरदास तैय्यार नही है। संघर्ष में सूरदास सत्याग्रह करता हुआ आत्म -बलिदान करता है। कथा की दूसरी ओर ज्ञान सेवक की कन्या कुँवर विनयसिंह से प्रेम करती है. किन्तु उकसे आत्म बलिदान के बाद आत्महत्या कर लेती है। सही पर प्रेम पवित्रता उजागर होती है। जाहिर है कि उपन्यास का उद्देश त्याग, प्रेम और बलिदान को स्थापित करना है। सूरदास -गाँधीवाद का प्रतीक,ज्ञानसेवक पूँजीवाद का और कन्या एने बेसंट का विश्वधर्म की प्रतीक -स्पष्ट है कि तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण ही इस उपन्यास कर प्रतिपाद्य है।

• निर्मला :

निर्मला उपन्यास के उपन्यासकार प्रेमचन्द ने भारतीय समाज जीवन में पनपती दहेज प्रथा और उससे निर्मित अनमेल विवाह की समस्या को प्रगट किया है। नायिका निर्मला की विधवा मॉ दहेत देने में असमर्थ होती है। परिणाम स्वरुप उसका विवाह अधेड अवस्था के एक विधुर तोताराम से किया जाता है.तोताराम की पहली पत्नी से तीन संतान होने पर भी वह विवाह करता है। किन्तु उसके मन में सन्देह निर्माण होता है कि अपनी पत्नी निर्मला और बड़े पुत्र के नाजायज संबंध है - परिणामत: परिवार चौपट हो जाता है. अंतत: निर्मला की मृत्यू से इसका छुटकारा मिलता है।

• कर्मभूमि :

कर्मभेमि उपन्यास सत्याग्रह आंदोलन और हिन्दू-मुस्लिम एकता की माँग को उजागर करता है- नायक अमरकांत विवाहित होते हुए भी मुस्लिम कन्या सकीला से प्रेम करता है और बाद में देशसेवा करता हुआ सकीला

www.gjnrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-III February 2015

को भी प्रेरणा देता है - विविध किसानी आंदोलन में सक्रिय रहता है। दलितों के शोषण, छुआछूत, सूदखोरी, चोरी का व्यापार - पारिवारिक रिश्तों में भी एक दूसरे को गुलाम बनाने बी होड़, शिक्षित व्यक्तियों की स्वार्थीवृत्ति, जमींदारों की शोषण नीति आदि सामाजिक समस्याओं की पोल खोलता है।

- **गबन :**

इस उपन्यास में मध्यमवर्गीय जीवन की समस्याओं को चित्रित किया है. रामनाथ सरकारी नौकर है. जो अपनी पत्नी जालपा के आभूषण प्रियता के लिए गबन कर लेते है - परिणामत: गिरफ्तार होता है- पत्नी जालपा उसकी सहायता करती है। जाहिर है कि मध्यवर्गीय आभूषण प्रियता और पुरुषों के मिथक का आत्मदर्शन उसके दुष्परिणाम के साथ चित्रित है।

- **गोदान :**

भारतीय कृषक जीवन का महाकाव्य - गोदान है उपन्यासकार प्रेमचन्द की यह मौलिक सर्वोत्कृष्ट रचना मानी जाती है। इस उपन्यास का नायक होरी किसान है। जमींदार तथा महाजनों की शोषण का शिकार है। जो समूचे भारत वर्ष के किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। तो होरी का पुत्र गोबर - मजदूरों का तथा नयी पीढी की सोच का प्रतिनिधिं है। होरी की जीवनगाथा उपन्यास का केन्द्र है - तो पत्नी धनिया अपनी दो टूक शैली से पूँजीपतियों का सामना करती हुई जीजीविषा बनाए है। मुख्यत: परिश्रम की दुनिया की सच्चाई प्रेमचन्द उजागर करते है, तो दूसरी ओर मुनाफे की दुनिया में रायसाहब मिल मालिक खन्ना, प्रोफेसर मेहता और डॉक्टर मालती आदि आते है।

- **उपसंहार :**

प्रेमचन्द जी का साहित्य युगीन परिस्थितीयों और उससे निर्मित समस्याओं की तस्वीर है. मानवी जीवन की सामाजिक सच्चाइयों का विश्लेषण आपके साहित्य में मिलता है - या कहें कि भारतीय समाज जीवन की ऐसी कोई समस्या नहींहै, जिसपर प्रेमचन्द ने साहित्य नहीं लिखा हो। समाज के सभी वर्ग, वर्ण के साथ, झोपड़ी से महल, गाँव से महानगर, भिखमंगे से जमींदार, अधिकारी से मिल-मालिक तक सभी का चित्रण करनेवाले साहित्यसृष्टा का ०८ अस्टूबर १९३६ यें बीमारावस्था में स्वर्गवास हुआ. जीवनभर प्रेमचन्दजी समूची मानव जाति के कल्याण के लिए साहित्य सृजन करते रहे. या मानवतावाद को स्थापित करने के लिए साहित्य लिखते रहे।

- **सहायक ग्रंथ :**

१. कलम का सिपाही - अमृतराय
२. प्रेमचन्द और उनका युग - रामविलास शर्मा
३. प्रेमचन्द जीवन, कला और कृतित्व - हॅसराज रहबर
४. प्रेमचन्द - कहानी का श्रेष्ठ - महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

www.gnrws.in